कर्म करते करते की हुई इश्वर की याद सर्वोत्तम है

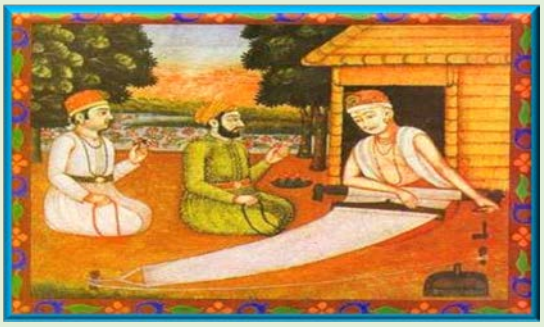

एक बार नारदजी ने विष्णुजी से पूछा- दुनिया में आपको सबसे ज्यादा कौन याद करता है? उत्तर में विष्णुजी ने कहा- एक किसान जो दिन भर खेत में खेती करता है। नारदजी हैरान रह गए। समझने के लिए नारदजी भेष बदलकर किसान के पास जाते हैं और जांचते हैं कि वह कितनी बार भगवान को याद करता हैं। परीक्षण से पता चलता है कि उन्होंने दिन में केवल तीन बार भगवान को याद किया। नारदजी विष्णुजी के पास आते हैं और कहते हैं कि किसान ने आपको केवल तीन बार याद किया और मैं आपको दिन भर याद करता हूं। क्या मेरी याद सबसे ज्यादा नहीं गिनी जानी चाहिए? तब विष्णुजी ने नारद को तेल से भरा कटोरा दिया और कहा कि वह इस कटोरे को अपने हाथ में लेकर पूरे ब्रह्मांड में घूम कर वापिस आये, लेकिन ध्यान रहे कि तेल बिल्कुल न गिरे। नारदजी ने विष्णुजी के कहने अनुसार चक्कर लगाया और वे वापस लौट आए। विष्णुजी ने पूछा कि तुमने मुझे कितनी बार याद किया? नारदजी ने उत्तर दिया 'मेरा पूरा ध्यान तेल पर था इसलिए आज मैं आपको एक बार भी याद नहीं कर पाया।' तब हसकर विष्णुजी बोले जो मुझे अपना कर्तव्य करते करते याद करते हैं वही श्रेष्ठ है, वो ही सच्चा कर्मयोगी है।

गीता के तीसरे अध्याय का सार रूप में यही संदेश है की कर्म करते रहना, साक्षी हो कर गृहस्थी संभालना, वफादार रहना, लोभ से मुक्त रहना और मुझे याद करना | ईश्वर की याद में किया गया हर कार्य श्रेष्ठ है। इसमें भी मन-बुद्धि-संस्कार को नियंत्रण में रखते हुए, विकारों से विरक्त होकर किया गया प्रत्येक कर्म सुकर्म है। इन्द्रियों के द्वारा अनेक कर्म करते हुए भी आत्मा और परमात्मा के चिन्तन में रहना ही वास्तविक कर्मयोग है। आइए एक और सच्चे कर्मयोगी का दृष्टान्त देखिए।

एक जगह आमने सामने एक साधु और एक कसाई रहते थे। वे दोनों अपना अपना काम करते थे| लेकिन कसाई हमेशा सोचता था कि तपस्वी कितना भाग्यशाली हैं कि लगातार भगवान को याद करता है। कसाई हमेशा साधु के लिए अच्छे विचार रखता था। वह समय-समय पर साधु के सत्संग में बैठकर अच्छी बातें सुनता था। दूसरी ओर, तपस्वी हमेशा कसाई की निंदा करता था और उसकी बुराइयों का चिंतन करता था। जब उन दोनों की मृत्यु हो गई, तो धर्मराज ने तपस्वी से पूछा कि उसने कौन से अच्छे कर्म किए हैं। तपस्वी ने उत्तर दिया, "मेरे सामने रहने वाला कसाई बहुत बुरा काम कर रहा था। आपको इस पापी को नरक में भेजना चाहिए।" धर्मराज ने फिर तपस्वी से पूछा- तुम कसाई की बात करना छोडो, तुम्हारे द्वारा किए गए कर्मों की बात करो। फिर भी साधु कसाई की बात करता रहा। जब धर्मराज ने कसाई से वही प्रश्न पूछा, तो उसने उत्तर दिया कि मेरा तो व्यवसाय खराब था लेकिन साधु की अच्छी अच्छी बातें सुनकर जीवन में उतारने का प्रयत्न जरुर करता था| दिल से भगवान से माफी भी मांगता था। परिणाम यह हुआ कि

धर्मराज ने साधु को नर्क और कसाई को स्वर्ग भेज दिया।

उपरोक्त कहानी का सार इतना ही है कि आप क्या कर्म करते हैं वो इतना महत्वपूर्ण नहीं हैं आप वह कर्म कैसे करते हो किस भाव से करते हो वह महत्वपूर्ण हैं| कुछ लोग भगवान की पूजा करने या भगवान को पाने के लिए अपनी नौकरी, व्यवसाय या घर को छोड़ देते हैं। कुछ जंगल या गुफाओं में चले जाते हैं। अगर हम वानप्रस्थ हैं और यदि यह सब कर रहे हैं, तो इस तरह का त्याग भगवान के करीब आने में मदद कर सकता है। लेकिन इस प्रकार का त्याग ईश्वर प्राप्ति के लिए अनिवार्य नहीं है। जो गृहस्थ में हैं और गृहस्थ की देखभाल करने के लिए निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्यों का पालन करता हैं, उसी का जीवन सफल और सार्थक जीवन है।

चंद्रगुप्त को प्रशिक्षित और तैयार करने वाले चाणक्य से जब पूछा गया "आप चंद्रगुप्त को राजा क्यों बनाना चाहते हैं जबकि आप स्वयं हर तरह राजा बनने योग्य हैं?" चाणक्य ने कहा - राजा सामाजिक जीवनवाला, पत्नी, पुत्र, पुत्रियों से एवं धन संपत्ति से संपन्न व्यक्ति होना चाहिए। ताकि वह सबके दुख को समझ सके, लोगों के साथ ठीक से पेश आ सके और न्याय कर सके। मैं सन्यासी हूँ इसलिए इस पद के लिए योग्य नहीं हूँ। जिस राजा का परिवार नहीं है, वह प्रजा की समस्या को क्या समझेगा?

भगवान ने हमें इस धरती पर सक्रिय रहने, गृहस्थ की देखभाल करते विश्व नाटक में पार्ट बजाने के लिए भेजा है। मानव जीवन का लक्ष्य श्रेष्ठ कर्म करके जीवन को सार्थक बनाना है। सत्कर्मों की राशि जमा करके अगले जन्मों को सुधारना है। विश्व में धर्मात्मा, पवित्र आत्मा, महात्मा, ऋषियों की महिमा जरूर गाई जाती हैं, लेकिन राम-सीता, कृष्ण-राधा, लक्ष्मी-नारायण, शंकर-पार्वती जैसे गृहस्थ देवी देवता समान नहीं। हम उसे भगवान के रूप में पूजते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि वे सभी गृहस्थी थे, प्रवृत्तिशील थे, गुणों, शक्तियाँ, और संपदा से समृद्ध थे।

वास्तविक आवश्यकता इस बात की है कि हम आध्यात्मिक ज्ञान की समझ के द्वारा विकर्मो से दूर रहें और अपने सभी कर्मों को सुकर्म या अकर्म बना दें। कर्म के समय यदि ईश्वर का स्मरण करने की आदत हो जाए तो हमारे सभी कर्म अच्छे बन जाते हैं। क्योंकि भगवान की याद में उनकी श्रीमत स्वतः समाई हुई है| ईश्वर द्वारा दिए गए आध्यात्मिक ज्ञान की समझ हो, मन-बुद्धि में उसकी याद हो, उनके हाथ और साथ का अनुभव हो तो हमारी हर प्रवृत्ति, हमारा हर कर्म सत्कर्म ही होगा और वह कर्म ईश्वरीय सेवा में बदल जाएगा। साथ साथ वह कर्म, अगले श्रेष्ठ जन्मों के लिए, श्रेष्ठ संचित कर्म में बन जाएगा ।

संक्षेप में हमें यह समझना चाहिए कि कर्म का त्याग किए बिना या कर्म सन्यास किये बिना, विकारों से दूर रहकर, कर्म फल पर के अधिकार का त्याग कर भगवान की याद में किया गया प्रत्येक कार्य श्रेष्ठ कर्म है। दूसरे शब्दों में, भगवान का स्मरण करते करते किया गया हर कर्म सबसे अच्छा फल देने वाला होता है। ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित जो राजयोग सिखाया जाता है वह उत्तम फल देने वाला सच्चा कर्मयोग है| आप भी राजयोग सीखे और जीवन को सफल और श्रेष्ठ बनाए|

------- 00000 -------

ब्रह्माकुमार प्रफुलचंद्र

WhatsApp +91 98258 92710